रेडियो धारावाहिक

'चलती रहे जिंदगी'

कड़ी संख्या – 29

विषय : जलवायु परिवर्तन : चुनौती का सामना करने के लिए नीतियां, योजनाएं और कार्यक्रम

(शीर्षक गीत)

सूत्रधार : *श्रोताओं, नमस्कार, 'चलती रहे जिंदगी' में आपका स्वागत है..... ।*

सतत् विकास आज हमारी...पूरी मानव सभ्यता की जरूरत है। हमें प्रकृति, पर्यावरण और विकास के बीच संतुलन रखते हुए आगे बढ़ना है, ताकि चलती रहे जिंदगी।

श्रोताओं, यह धारावाहिक सतत् विकास से जुड़े अनेक पहलुओं पर आपको जागरूक, सजग और सचेत करने का काम करता है।

आपको याद होगा कि पिछली कड़ी में हमने आपको जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग की वैश्विक विपदा से परिचित कराया था। इसके कारणों और प्रभावों की तह में जाने की कोशिश की थी। इस सिलसिले को जारी रखते हुए आज हम आपको बताएंगे कि इस चुनौती से निपटने के लिए पूरा विश्व किस तरह एकजुट होकर तैयारी कर रहा है। भारत में भी इसका सामना करने के लिए ठोस कदम उठाये गये हैं। प्रयास है कि ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन पर अंकुश लगे, जिससे धरती का पारा ऊपर ना चढ़ सके।

तो आइए चलते हैं डा. सूर्य प्रकाश के घर जहां यह चर्चा जोर पकड़ रही है..... ।

(दृश्य परिवर्तन का संगीत)

(दृश्य : डॉ. सूर्यप्रकाश का घर। डॉ. सूर्यप्रकाश, उनका बेटा राहुल और बेटी मेघना क्लाइमेट चेंज पर आयोजित सेमिनार से वापस आए हैं।)

मेघना : मम्मी, आज तो मजा आ गया क्लाइमेट चेंज सेमिनार में.....आप भी चलतीं तो अच्छा रहता.....बहुत कुछ मिस कर दिया आपने

रत्ना (मम्मी) : अच्छा.....ऐसा क्या मिस कर दिया.....जरा बताओ तो.....

मेघना : मम्मी, लंच के बाद जो आइसक्रीम मिली थी ना.....वो सच्ची बहुत–बहुत यमी थी.....आह.....हा....हा.....

(सभी हंसते हैं)

राहुल : मम्मी.....प्लीज, मेघना से ज्यादा ना पूछो.....वरना ये पूरे मेन्यू का पिटारा खोल कर बैठ जाएगी..... असल बात यह है कि हमें वहां क्लाइमेट चेंज के बारे में बहुत कुछ नया जानने का मौका मिला..... समझने का मौका मिला.....।

मेघना : हां मम्मी.....मैं भी यही बताने वाली थी.....मेरी समझ में तो यह बात अच्छे से आ गई कि अगर हम ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को किसी तरह कम से कम कर दें तो धरती के बढ़ते तापमान पर रोक लग सकती है.....।

सूर्य : वेरी गुड.....मेघना, तुमने तो एकदम पते की बात कह दी.....शाबाश.....

मेघना : थैंक्स डैडी.....एक आप ही हो जो मेरे टेलेंट की कद्र करते हो.....।

(सभी हंसते हैं)

राहुल : वैसे डैडी.....असल बात तो यह है कि इस पते की बात तक पहुंचने का पता क्या है.....मतलब रास्ता क्या है.....।

मम्मी : (हंसते हुए) यह भी पते की बात है.....।

(सभी हंसते हैं)

सूर्य : अब यह पता–पता खेलना छोड़ो.....राहुल, दरअसल यह कहना बहुत आसान है कि ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम किया जाए.....लेकिन हकीकत में यह काम बहुत कठिन है.....

रत्ना : हां.....क्योंकि तेज विकास के दौर में ऊर्जा की मांग लगातार बढ़ती जा रही है.....इससे दुनिया भर में बिजली उत्पादन जोर पकड़ रहा है.....मोटर वाहनों की तादाद बढ़ती जा रही है....और यह सब ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को बढ़ाता है.....।

मेघना : लेकिन मम्मी, हर समस्या का कोई ना कोई समाधान तो होता है....तो इससे बचाव का भी कोई रास्ता जरूर होगा.....।

सूर्य : हां, बिलकुल है.....और एक नहीं, कई रास्ते हैं.....लेकिन इन रास्तों पर चलने की पहली शर्त यह है कि दुनिया के सभी देश एकजुट होकर इस विपदा को रोकें.....क्योंकि यह समस्या किसी एक देश की नहीं, बल्कि पूरे धरती ग्रह की है।

राहुल : हां डैडी.....क्योंकि ग्रीनहाउस गैसें अलग–अलग देशों की सीमाएं नहीं जानती–पहचानतीं.....ये तो बस धरती के वायुमंडल में घुलती रहती हैं.....हवा के साथ बहती रहती है।

मेघना : अरे याद आया.....इस पर एक बढ़िया–सा गाना भी तो है.....गुनगुनाती है.....पंछी, नदिया, पवन के झोंके, कोई सरहद ना इन्हें रोके.....

(सभी हंसते हैं)

रत्ना : बिलकुल सही कहा तुमने मेघना.....इसीलिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा सभी देशों को इस मुद्दे पर एकजुट करने और एक साथ कदम आगे बढ़ाने की कोशिश की गई.....।

सूर्य : हां, ऐसी पहली कोशिश सन् 1992 में ब्राजील के रियो डी जेनीरो शहर में की गई। यहां संयुक्त राष्ट्र ने एक विशाल धरती शिखर सम्मेलन आयोजित किया, जिसमें 150 देशों के 40 हजार प्रतिनिधियों ने भागीदारी की.....।

राहुल : अच्छा.....इतना बड़ा सम्मेलन.....तो क्या तय हुआ वहां.....।

रत्ना : (हंसते हुए) तय कुछ खास नहीं हो पाया.....क्योंकि विकसित देश और विकासशील देश अलग–अलग गुटों में बंट गये.....एक–दूसरे को ग्लोबल वार्मिंग के लिए जिम्मेदार ठहराने लगे.....आरोप लगाने लगे...।

मेघना : ओह.....मतलब इतनी बड़ी और ऊंची दुकान.....फिर भी फीका निकला पकवान.....

(सभी हंसते हैं)

डॉ. माला : (प्रवेश करते हुए) क्या बात है.....क्या हंसी चल रही है.....

रत्ना : आइये–आइये डॉ. माला.....बस ये समझिये कि यहां भी छोटा–मोटा सेमिनार चल रहा है.....

(सभी हंसते हैं)

माला : और मुद्दा तो वही होगा.....क्लाइमेट चेंज.....ग्लोबल वार्मिंग

सूर्य : हां, बिलकुल ठीक समझा आपने डॉ. माला.....हम बात कर रहे थे कि जब धरती शिखर सम्मेलन में कोई ठोस नतीजा नहीं निकल पाया तो संयुक्त राष्ट्र ने एक दूसरी बड़ी पहल की.....।

माला : हां.....डॉ. सूर्य, इस अंतरराष्ट्रीय पहल को United Nations Framework Convention on Climate Change यानी UNFCCC कहा गया। इसका मकसद वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करना था.....। सीमित करना था.....।

राहुल : माला आंटी, इसमें भी तो बहुत सारे देश होंगे.....तभी तो बात बनेगी।

माला : इसमें.....यानी UNFCC में 197 देश शामिल हैं....और हर साल इनकी बैठक होती है, जिसे Conference of Parties यानी CoP कहा जाता है.....। इसमें पर्यावरण की बदलती हुई दशा के हिसाब से नई नीतियां.....नई लक्ष्य तय किये जाते हैं.....।

मेघना : माला आंटी, मुझे इस बात से कुछ–कुछ याद आ रहा है.....दो साल पहले की बात है.....कुछ हुआ था वहां, जहां एफिल टावर है.....हां.....हां.....याद आया पेरिस में.....क्या हुआ था.....क्या हुआ था.....

राहुल : अरे मेघना, अपने छोटे से दिमाग पर ज्यादा जोर ना डाल.....पेरिस में नवंबर, 2015 में Conference of Parties का आयोजन किया गया था.....मुझे अच्छी तरह से याद है, इसमें देश के प्रधानमंत्री भी गये थे.....।

सूर्य : अरे वाह राहुल, तुम्हें तो वाकई बहुत अच्छी तरह से याद है.....। इसमें 195 देशों ने हिस्सेदारी की और एक समझौता तैयार किया गया, जो कहता है कि दुनिया के सभी देशों को मिलकर यह कोशिश करनी होगी कि धरती का तापमान डेढ़ डिग्री सेल्सियस से ऊपर ना जा पाए.....।

रत्ना : राहुल, यह समझौता पेरिस एग्रीमेंट के नाम से मशहूर है.....और दुनिया के ज्यादातर देशों ने इसे मान लिया है... इस पर हस्ताक्षर कर दिये हैं.....और हर देश अपने–अपने स्तर पर ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी लाने के लिए प्रयास भी कर रहा है.....।

माला : रत्ना, तुम्हें मालूम है आज मुझे यहां किसने बुलाया है?

रत्ना : किसने?

माला : राहुल ने.....तो मैंने सोचा कि कुछ खास इंतजाम होगा, लेकिन यहां तो सब सूखा.....सूखा पड़ा है.....।

राहुल : नहीं आंटी.....मैंने बनवारी से समोसे लाकर रखे हैं.....।

रत्ना : हां.....हां.....मैं लाती हूं अभी चाय के साथ.....तब तक तुम लोग बातचीत जारी रखो.....।

मेघना : ना.....ना.....यह तो चर्चा चाय–समोसे पर ही जमेगी....तब तक के लिए स्ट्राइक.....हड़ताल.....

(सभी हंसते हैं)

(दृश्य परिवर्तन का संगीत)

माला : वाह.....समोसे तो सचमुच शानदार थे.....और चाय, उससे भी बढ़िया.....।

रत्ना : तो मेघना की स्ट्राइक अब खत्म हो गई ना.....।

राहुल : वो तो खत्म होनी ही थी.....अब देखना.....कैसे–कैसे सवाल दागेगी.....

(सभी हंसते हैं)

मेघना : डियर राहुल, मैं तुम्हें निराश नहीं करूंगी.....यह रहा पहला सवाल.....। माला आंटी, हमने यानी भारत ने भी तो पेरिस समझौते पर हस्ताक्षर किये होंगे.....हमने भी तो ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन कम करने के लिए कुछ लक्ष्य तय किये होंगे.....कोई कार्यक्रम बनाया होगा.....। है ना.....।

सूर्य : (हंसते हुए) लगता है समोसे खाकर मेघना को कुछ ज्यादा ही एनर्जी मिल गयी.....एक साथ इतने सारे सवाल दाग दिये.....। अब संभालो.....।

(सभी हंसते हैं)

माला : मेघना, कल सेमिनार में एक student session इसी मुद्दे पर हो रहा है.....यानी भारत जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए क्या कर रहा है.....क्या कदम उठाये गये हैं.....वगैरह.....वगैरह.....

रत्ना : तब तो अच्छा है.....राहुल और मेघना दोनों चले जाएंगे.....

सूर्य : हां, यह ठीक रहेगा.....लेकिन इससे पहले एक अंतरराष्ट्रीय कोशिश के बारे में भी जान लो.....।

राहुल : वो क्या.....।

सूर्य : यह अंतरराष्ट्रीय संधि क्योटो प्रोटोकॉल के नाम से मशहूर है, क्योंकि इस जापान के क्योटो शहर में एक विशाल सम्मेलन के बाद तैयार किया गया था, और यह बात है सन् 1997 की.....।

मेघना : डैडी, इसमें क्या तय किया गया.....यही कि सभी देश ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन कम करेंगे.....

माला : हां.....यह बात तो थी ही.....लेकिन इस संधि में पहली बार यह तय हुआ कि सभी औद्योगिक देश अपने यहां ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में सन् 1990 के मुकाबले 5 प्रतिशत की कमी लाएंगे और इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए सन् 2008 से 2012 तक का समय दिया गया.....।

राहुल : वेरी गुड.....तब तो इसके बहुत अच्छे नतीजे निकले होंगे.....है ना.....।

रत्ना : कहां.....अरे, अगर बढ़िया नतीजे होते तो आज दुनिया की परेशानी कुछ कम हुई होती.....।

सूर्य : हां.....सही बात है.....दरअसल क्योटो प्रोटोकॉल में विकसित देशों के लिए लक्ष्य तय किये गये थे, लेकिन भारत जैसे विकासशील देशों को ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन कम करने की केवल सलाह दी गई थी।

माला : हां.....इससे विकसित देश नाराज थे.....और उन्होंने जलवायु परिवर्तन पर रोक लगाने के लिए कोई बड़ा कदम नहीं उठाया।

रत्ना : हालांकि अब क्योटो प्रोटोकॉल का कार्यकाल सन् 2020 तक बढ़ा दिया गया है.....लेकिन अगर जमीनी हकीकत पर देखें तो अब पेरिस समझौता ज्यादा कारगर साबित हो रहा है।

मेघना : माला आंटी, मेरा समोसा खाये दिमाग में एक सवाल और बड़ी तेजी से उछाल मार रहा है.....।

(सभी हंसते हैं)

माला : तो बताओ.....जल्दी बताओ.....सवालों का दिमाग में ज्यादा देर तक उछलना सेहत के लिए ठीक नहीं है.....।

(सभी हंसते हैं)

मेघना : आप कह रहीं थी कि UNFCC की बैठक हर साल होती है जिसमें सभी देश भाग लेते हैं.....

माला : हां.....कबूल करती हूं कि यह कहा गया था.....

(सभी हंसते हैं)

मेघना : तो पेरिस में यह बैठक 2015 में हो गई.....और 2016 की बैठक का क्या हुआ.....कहां हुई.....

माला : मेघना, सच्ची तुम्हारा सवाल एकदम निशाने पर है.....सन् 2016 की बैठक नवंबर के महीने में मोरक्को के मारकेश नामक शहर में हुई। और यही क्योटो प्रोटोकॉल के लक्ष्यों पर भी चर्चा हुई। और तय किया गया कि सन् 2018 तक सभी देशों को अपने यहां पेरिस समझौता लागू करने से संबंधित सभी फैसले ले लेने चाहिए।

सूर्य : हां.....क्योंकि जितनी ज्यादा देर होती जाएगी, हम ग्लोबल वार्मिंग की विपदा में उतना ही ज्यादा फंसते जाएंगे।

रत्ना : माला, मुझे लगता है कि हमें एक अंतरराष्ट्रीय संधि.....की बात और करनी चाहिए.....क्योंकि वो भी कहीं ना कहीं धरती के पर्यावरण से जुड़ी है.....जलवायु परिवर्तन से जुड़ी है.....।

सूर्य : तुम किस संधि की बात कर रही हो रत्ना? साफ–साफ बताओ।

रत्ना : मैं बात कर रही हूं मांट्रियल प्रोटोकॉल की.....

माला : ओह.....मांट्रियल प्रोटोकॉल.....तुमने बिलकुल ठीक याद दिलाया.....सन् 1987 में यह संधि हुई थी और इसे 1989 में लागू किया गया। इसका मकसद ओजोन परत को बचाना था.....इसका संरक्षण करना था, जिससे सूरज की हानिकारक पराबैंगनी किरणें धरती तक ना पहुंच सकें।

मेघना : माला आंटी, हमारे स्कूल में हर साल 16 सिंतबर को ओजोन परत दिवस भी मनाया जाता है.....हमारी साइंस मैडम इस बारे में बताती हैं.....।

माला : अच्छा, तो क्या बताया उन्होंने.....जरा हमें भी बताओ.....

मेघना : माला आंटी, साइंस मैडम ने बताया कि भारत सरकार ने ओजोन परत को नुकसान पहुंचाने वाले रसायनों.....क्या नाम है इनका.....क्या नाम.....

राहुल : (टोककर) सीएफसी.....क्लोरोफ्लोरो कार्बन्स.....।

मेघना : हां.....हां.....यही.....भारत ने इनके उत्पादन और उपयोग पर सन् 2010 में ही पाबंदी लगी दी थी.....तो अब हमारे देश में इनका इस्तेमाल लगभग नही ंके बराबर है.....।

सूर्य : हां.....और इस तरह भारत सरकार ने मांट्रियल प्रोटोकॉल के अपने वादे को समय से पहले ही पूरा कर लिया.....। इसके लिए पूरी दुनिया में भारत की सराहना हो रही है।

रत्ना : तो चलो, इस खास उपलब्धि के लिए हम सब एक–दूसरे को और पूरे भारत को बधाई देते हैं.....।

सभी : बधाई.....

(सभी हंसते हैं)

(दृश्य परिवर्तन का संगीत)

(कई छात्रों की बातचीत की आवाजें)

आकाश : डियर स्टुडेंट्स, आपका आज के इस विशेष सत्र में स्वागत है.....मेरे यानी आकाश के साथ हैं डॉ. माला, जो देश की एक जानी–मानी पर्यावरण विशेषज्ञ हैं.....।

माला : मैं भी यहां मौजूद सभी छात्र–छात्राओं का स्वागत करती हूं.....आज हम यहां चर्चा करेंगे कि जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग की विपदा से निपटने के लिए भारत में क्या तैयारी चल रही है.....क्या कदम उठाये गये हैं.....वगैरह.....।

सौरभ : सर, मेरा नाम सौरभ है.....12th का student हूं.....कुछ समय पहले मैंने प्रधानमंत्री जी की मन की बात रेडियो पर सुनी थी.....वह भी इस बारे में बात कर रहे थे।

मेघना : हां सर, उन्होंने यह भी कहा कि हमें सोलर एनर्जी का इस्तेमाल करना चाहिए और एलईडी लाइट्स लगानी चाहिए.....इससे क्या होगा सर.....

आकाश : गुड.....वेरी गुड.....मुझे खुशी है कि आप लोग इस मामले में जागरूक हो.....मेघना ने जो सवाल उठाया है, उसके बारे में ये बताना चाहूंगा.....

माला : (टोककर) आकाश, सौरभ की जागरूकता और मेघना के सवाल के लिए पहले तालियां होनी चाहिए.....

आकाश : हां.....हां.....जरूर.....

(तालियों की जोरदार आवाज)

माला : हां.....यह हुई ना बात.....

आकाश : स्टुडेंट्स, दरअसल बात यह है कि ग्रीनहाउस गैसों का ज्यादातर उत्सर्जन एनर्जी या ऊर्जा के परंपरागत ढंग से.....यानी कोयले से बिजली उत्पादन के कारण होता है.....और दूसरी बड़ी वजह है मोटर वाहनों में पेट्रोल–डीज़ल का इस्तेमाल.....खाना पकाने के लिए लकड़ी–कोयला का इस्तेमाल..... वगैरह.....।

माला : तो इसका मतलब यह हुआ कि अगर हम बिजली का कम से कम इस्तेमाल करें.....या एनर्जी के लिए renewable sources का इस्तेमाल करें तो ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी आ सकती है.....।

सौरभ : तो मैडम, मोटर कारों....बाइक वगैरह के कम इस्तेमाल से भी फायदा होगा।

माला : हां.....जरूर होगा.....इसीलिए प्रधानमंत्री ने सोलर एनर्जी के इस्तेमाल को बढ़ावा देने की बात कही है.... ..क्योंकि सौर ऊर्जा clean and green energy है.....इसी तरह wind energy, यानी पवन ऊर्जा भी स्वच्छ और हरित ऊर्जा है.....बायोमास और गोबर, कूड़े–कचरे से बिजली बनाने के इस्तेमाल को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। आजकल छोटी–छोटी जलधाराओं से भी बिजली बनाने की पहल की गयी है। ऊर्जा के यह सभी स्रोत renewable sources या अक्षय ऊर्जा हैं।

आकाश : दूसरी तरफ एलईडी को इसलिए प्रोत्साहन दिया जा रहा है कि ये कम बिजली की खपत करते हैं.... ..और रोशनी भी बेहतर देते हैं। इस हॉल में एलईडी से ही रोशनी हो रही है.....है ना बढ़िया जगमग...

सभी : हां.....

मेघना :सर, इसका.....मतलब renewable sources का क्या पेरिस समझौते में भी कोई जिक्र किया गया है.....

माला : हां.....हां.....जरूर.....हमने यानी इंडिया ने इस समझौते के तहत यह लक्ष्य तय किया है.....या कहें संकल्प लिया है कि सन् 2030 तक देश की कुल बिजली उत्पादन क्षमता में अक्षय ऊर्जा की हिस्सेदारी बढ़कार 40 प्रतिशत तक की जाएगी, जो अभी 17–18 प्रतिशत तक है।

आकाश : हां.....इसी तरह यह भी तय किया गया है कि जीडीपी की उत्सर्जन तीव्रता को 2005 के मुकाबले 2030 तक घटाकर 33 से 35 प्रतिशत तक कम कर दिया जाएगा। मतलब यह कि विकास के कार्यों..... और ऊर्जा का इस्तेमाल करने वाले सभी क्षेत्रों में बिजली की बचत की जाएगी और अक्षय ऊर्जा के इस्तेमाल को बढ़ावा दिया जाएगा।

मेघना : सर, ये targets तो बड़े जबर्दस्त लग रहे हैं.....लेकिन, यह सब होगा कैसे.....मुझे तो बड़ा कठिन काम लग रहा है....अपन का तो पसीना छूट जाएगा.....।

(सभी हंसते हैं)

माला : ना.....ना.....इतना घबराने की कोई जरूरत नहीं है। भारत सरकार के पास इस लक्ष्य तक पहुंचने की बाकायदा एक व्यवस्था है.....कई योजनाएं हैं और एक पक्का इरादा तथा संकल्प भी है।

आकाश : हां, जैसे अक्षय ऊर्जा के उत्पादन और उपयोग को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार का एक अलग मंत्रालय है.....नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय.....नाम तो सुना होगा तुम लोगों ने.....।

सौरभ : हां सर, Ministry of New and Renewable Energy.....

माला : इसी तरह घरेलू से लेकर बड़े–बड़े उद्योगों तक में ऊर्जा की बचत और ऊर्जा के इस्तेमाल की कुशलता को बढ़ाने के लिए Bureau of Energy Efficiency, यानी BEE देश भर में काम कर रहा है.. ..। तुम लोगों ने यह तो देखा होगा कि फ्रिज, टीवी, एसी वगैरह पर स्टार लेबल लगा होता है.....।

मेघना : हां मैडम, देखा है.....और मैं इसके बारे में जानती भी हूं। स्टार लेबल पर एक से पांच तक सितारे हो सकते हैं.....पांच सितारे का मतलब है कि इसमें बिजली की खपत सबसे कम होगी।

सौरभ : मैडम, हमारे घर में सारे बिजली के सामान फाइव स्टार वाले ही हैं.....।

माला : वेरी गुड.....तो भई तालियां हो जाएं इस बात पर.....

(तालियां)

आकाश : स्टुडेंट्स, यह स्टार लेबल वाली योजला BEE की है.....और इससे बिजली की मांग कम करने में काफी मदद मिली है.....।

माला : इसी तरह भारत सरकार की एक संस्था है..... Petroleum Conservation Research Association..... यानी PCRA..... यह ट्रांसपोर्ट सैक्टर में, घरों में.....और industries में fossil fuels की खपत को कम करने की टिप्स देती है.....इससे पेट्रोल, डीजल और गैस की खपत कम करने.....बचत करने में कामयाबी मिली है.....।

मेघना : मैडम, PCRA की टिप्स से मेरे पापा अपनी कार में पेट्रोल की बचत करते हैं.....और मम्मी रसोई में गैस की बचत.....।

माला : तो भई, हो जाएं तालियां मेघना के मम्मी–पापा के लिए.....।

(तालियां)

आकाश : तो एक बार फिर हम लोग अक्षय ऊर्जा की ओर वापस लौटते हैं.....पेरिस समझौते के बाद भारत सरकार ने अपने renewable energy के targets को पहले से बढ़ा दिया है.....और इसके लिए कई नई योजनाएं भी शुरू की हैं.....

माला : हां, अब लक्ष्य यह है कि सन् 2022 तक देश में अक्षय ऊर्जा की 175 गीगावाट कैपेसिटी स्थापित की जाए.....इसमें 100 गीगावाट सोलर एनर्जी हो, 60 गीगावाट पवन ऊर्जा हो, 10 गीगावाट जैव–ऊर्जा हो और पांच गीगावाट क्षमता छोटी जल धाराओं से हासिल की जाए.....। जब हम यह लक्ष्य हासिल करेंगे तभी पेरिस समझौते में अपने संकल्प को पूरा कर पाएंगे.....।

आकाश : हां.....और खासतौर से सोलर एनर्जी में इस target तक पहुंचने के लिए एक National Solar Mission जारी है, जिसमें बड़ी तत्परता से काम करने हुए देश भर में बड़ी संख्या में छोटे–बड़े solar power plants लगाये जा रहे हैं..... Solar Home Lighting System को बढ़ावा दिया जा रहा है, जो बिजली बनाते हैं।

सौरभ : सर, मेरे घर की छत पर तो सोलर वाटर हीटर लगा है, जिससे हमें मुफ़्त गर्म पानी मिलता है..... बिजली खर्च नहीं होती.....

माना : तो भई, सौरभ के घर के लिए भी हो जाएं तालियां.....।

(तालियां)

आकाश : स्टुडेंट्स, अब जब मिशन की बात चली है तो बता दें कि हमारे देश में जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपटने के लिए एक बड़ी.....राष्ट्रीय कार्य योजना तैयार की गयी है.....जिसमें मुख्य रूप से आठ राष्ट्रीय मिशन काम कर रहे हैं.....यह राष्ट्रीय सोलर मिशन भी इसी का हिस्सा है.....।

माला : हां.....इसके अलावा ऊर्जा उपयोग की कुशलता बढ़ाने, देश को हरा–भरा बनाने, जलवायु परिवर्तन की जानकारी और ज्ञान को बढ़ाने के लिए भी राष्ट्रीय मिशन चलाये जा रहे हैं.....

आकाश : पानी के लिए, टिकाऊ खेती और टिकाऊ पर्यावास के लिए तथा हिमालय के इको–सिस्टम के संरक्षण के लिए भी राष्ट्रीय मिशन इसमें शामिल हैं। इन सबके जरिये कोशिश यह है कि देश में अक्षय

ऊर्जा का विकास हो, पर्यावरण का संरक्षण हो और हम अपने स्तर पर जलवायु परिवर्तन पर रोक लगाने की वैश्विक मुहिम में एक बड़ा योगदान कर सकें।

मेघना : सर, यह तो बड़ा शानदार काम हो रहा है, लेकिन मैं सोच रही थी कि हमारे इतने बड़े देश में इतना सारा काम कैसे होता होगा.....कितने सारे तो हमारे राज्य हैं.....सबकी जलवायु अलग–अलग है.....तो.....

माला : अरे मेघना.....यही तो हमारे देश की खूबसूरती है.....यही तो हमारी ताकत है.....राष्ट्रीय कार्य योजना की तर्ज पर देश के 33 राज्यों ने भी अपने लिए कार्य योजनाएं तैयार की हैं, जिनमें राज्य की दशाओं के हिसाब से जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपटने के लिए खाका तैयार किया गया है।

मेघना : मैडम, हमारे केशव भैया हैं ना, वो खेती करते हैं.....उनको तो जलवायु बदलने से बड़ी दिक्कत हो रही है.....तो खेती को बचाने के लिए भी कुछ खास किया जा रहा है क्या.....।

आकाश : हां.....बिलकुल किया जा रहा है.....क्योंकि हमारे देश की अर्थव्यवस्था आज भी काफी हद तक कृषि पर निर्भर है.....यदि खेती को कोई नुकसान पहुंचता है, तो इसका असर पूरे देश पर पड़ेगा.....इसलिए NICRA नाम से एक बड़ी.....राष्ट्रीय परियोजना चलायी जा रही है..... NICRA का मतलब है National Initiative on Climate Resilient Agriculture.....।

माला : इस परियोजना में अलग–अलग जलवायु क्षेत्रों के लिए ऐसी कृषि तकनीकें, उपाय, फसलों की किस्में और कृषि प्रणालियां विकसित की जा रही हैं, जिनसे जलवायु परिवर्तन के दौर में भी खेतों में हरियाली बनी रहे.....कृषि उत्पादन को कोई नुकसान ना पहुंचे.....।

आकाश : अच्छी बात यह है कि इसके लिए किसानों को प्रशिक्षण देकर बाकायदा तैयार भी किया जा रहा है.... .और इस कहते हैं क्लाइमेट–स्मार्ट एग्रीकल्चर.....देश भर में इसे बढ़ावा दिया जा रहा है.....।

सौरभ : जब देश भर में इतना कुछ हो रहा है तो इस पर भारी खर्च भी हो रहा होगा.....

मेघना : खर्च की टेंशन तू ना ले सौरभ.....तुझसे कोई मांगने नहीं आ रहा.....हां.....

(सभी हंसते हैं)

माला : साइलेंस.....साइलेंस प्लीज.....मेघना, ऐसे पर्सनल कमेंट करने की कोई जरूरत नहीं है.....

मेघना : सॉरी मैडम.....

आकाश : सौरभ ने जलवायु परिवर्तन का सामना करने के लिए.....इस पर रोक लगाने के लिए होने वाले खर्च पर सवाल किया है.....जो एक अच्छा सवाल है.....।

माला : अच्छे सवाल पर तो तालियां बनती हैं ना.....

(तालियां)

आकाश : स्टुडेंट्स, बजट के मामले में इस मुद्दे पर हमारी सरकार काफी गंभीर है.....अलग–अलग मिशन के लिए.....योजनाओं के लिए पर्याप्त बजट की व्यवस्था की गयी है.....वैसे हाल में सरकार ने एक विशेष जलवायु परिवर्तन अनुकूलन निधि.....यानी Adaptation Fund बनाया है.....इसके तहत राष्ट्रीय और राज्य के स्तर पर ऐसी गतिविधियों को फंड्स्स दिये जाते हैं, जिनकी मदद से जलवायु परिवर्तन का सामना किया जा सके। इसे 100 करोड़ रुपये की शुरूआती पूंजी से शुरू किया गया है।

सौरभ : वाह.....यह तो बहुत अच्छा है।

माला : इसके अलावा एक राष्ट्रीय स्वच्छ ऊर्जा निधि का गठन भी किया गया है.....इसका उद्देश्य वित्तीय सहायता देकर स्वच्छ ऊर्जा के प्रयासों को बढ़ावा देना है.....।

मेघना : मैडम.....स्वच्छ ऊर्जा का मतलब तो अक्षय ऊर्जा.....जिसके उत्पादन से प्रदूषण ना हो....ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन ना हो.....।

माला : हां.....बिलकुल ठीक समझा तुमने.....इस मामले में भारत ने एक ने एक बड़ी अंतरराष्ट्रीय पहल करते हुए एक वैश्विक सौर ऊर्जा समूह का गठन किया है, जिसमें भारत समेत 120 देश शामिल हैं। और ये सभी ऐसे देश हैं, जहां सौर ऊर्जा खूब.....यानी प्रचुरता में मिलती है।

आकाश : इस तरह भारत पूरी दुनिया में सौर ऊर्जा के उत्पादन और इस्तेमाल की एक मुहिम चला रहा है..... क्योंकि जलवायु परिवर्तन का सवाल किसी एक देश का नहीं, बल्कि पूरी दुनिया.....या कहें धरती ग्रह का है।

मेघना : सर, इसके मतलब हमारा देश अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी नाम कमा रहा है.....काफी आगे है.....।

माला : हां, लेकिन इससे हमारी जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है.....इस सिलसिले में भारत ने सन् 1991 में भी एक अंतरराष्ट्रीय पहल की थी। दुनिया के 180 देशों ने एकजुट होकर 'ग्लोबल एनवाइरोमेंट फैसिलिटी' यानी 'जेफ' नाम से एक अंतरराष्ट्रीय मंच बनाया था। यह मंच आज भी सक्रिय है और जलवायु परिवर्तन के साथ पर्यावरण से जुड़े अन्य पहलुओं पर अनुसंधान व विकास के लिए सहायता देता है।

आकाश : हां, भारत में जलवायु अनुकूल कृषि और अक्षय ऊर्जा के विकास से संबंधित अनुसंधान परियोजनाओं को 'जेफ' द्वारा सहायता दी जा रही है।

सौरभ : सर, हम दुनिया की बात कर रहे हैं, लेकिन हमें अपने आस–पड़ोस पर भी तो ध्यान देना चाहिए..... पिछले एक सेशन में बताया गया था कि धरती का तापमान बढ़ने से बांग्लादेश का एक हिस्सा समुद्र में डूब सकता है.....।

माला : भई सौरभ का यह सवाल तो सचमुच तालियों की मांग कर रहा है.....

(तालियां)

माला : सौरभ, शायद तुम्हें पता होगा कि भारत ने पड़ोसी देशों के साथ मिलकर 'सार्क' नामक एक संगठन बनाया है.....'सार्क' का मतलब है क्षेत्रीय सहयोग के लिए दक्षिण एशियाई संघ। इसके अंतर्गत आपसी सहयोग से जलवायु परिवर्तन की चुनौती का सामना करने के लिए कई योजनाएं चलायी जा रही हैं। यह पूरा क्षेत्र कंधे से कंधा मिलाकर इस समस्या का सामना करने के लिए तैयार है और इस पर रोक लगाने का काम भी कर रहा है।

मेघना : मैडम, इसका मतलब तो यह हुआ कि.....(गुनगुनाती है) हैं तैयार हम.....हैं तैयार हम.....

(सभी हंसते हैं)

आकाश : बिलकुल ठीक कहा तुमने मेघना, जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग की विपदा से निपटने के लिए आज पूरा विश्व एकजुट होकर काम कर रहा है।

माला : और भारत ने इसके निपटने के लिए.....इसका सामना करने के लिए और इस पर रोक लगाने के लिए कई ठोस नीतियां, कार्यक्रम और योजनाएं बनायी हैं, जिन पर एक मजबूत इरादे के साथ हम आगे बढ़ रहे हैं।

आकाश : इससे हमें पूरी आशा है कि जलवायु परिवर्तन की विपदा भारत में कोई गंभीर नुकसान नहीं पहुचा पाएगी.....हम इसका डटकर सामना करेंगे.....। और इस पर रोक भी लगाएंगे।

मेघना : मैडम, अब हमें विश्वास हो गया कि हमारा भविष्य सुरक्षित हाथों में है.....वरना मैं तो डर ही गई थी.....

(सभी हंसते हैं)

(तालियां)

(समापन संगीत)